केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
मुख्यालय, दिल्ली
प्रशासन एकक द्वारा हिंदी गतिविधि का आयोजन
– एक संक्षिप्त रिपोर्ट

राजभाषा हिंदी के प्रसार-प्रचार के तहत बोर्ड मुख्यालय की प्रशासन शाखा की इकाइयों द्वारा 29 नवंबर, 2024 को हिंदी भाषा की भारतीय महिला साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं पर चर्चा एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में उनकी रचनाओं पर चर्चा संबंधी विषय पर निम्नानुसार हिंदी गतिविधि का आयोजन किया गया:-

स्थान: बोर्ड मुख्यालय, तृतीय तल पूर्वाह्न 11.00 बजे
हिंदी गतिविधि: हिंदी भाषा की भारतीय महिला साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं पर चर्चा एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में उनकी रचनाओं पर चर्चा।

श्रीमती नेहा शुक्ला, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने श्रीमती कैथरीन, संयुक्त सचिव (आईटी), श्री गुलाब सिंह अवर सचिव, (कार्मिक), श्री प्रीतम सलूजा, अवर सचिव (प्रशासन), श्रीमती पूनम मल्होत्रा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी को संबोधित करते हुए उपर्युक्त गतिविधि में सभी कार्मिकों का अभिनंदन किया। इसके उपरांत, श्री गुलाब सिंह, अवर सचिव (कार्मिक) ने गतिविधि के विषय की जानकारी दी। प्रशासन 2 व 3, कार्मिक ए एवं बी, और हिंदी प्रकोष्ठ आदि शाखाओं के कुल मिलाकर लगभग 45 कार्मिकों ने भाग लिया। श्रीमती नेहा शुक्ला, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने प्रतिभागियों के समक्ष गतिविधि का प्रयोजन और रूपरेखा रखी:-

<u>हिंदी प्रकोष्ठ:-</u> श्रीमती नेहा शुक्ला कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की हिंदी भाषा की भारतीय महिला साहित्यकारों की साहित्यिक जीवन यात्रा का परिचय दिया। इसके उपरांत, उन्होंने भारतीय कठोर समाज में अपनी स्थिति को मजबूती से स्थापित करने वाली भक्तिकाल की श्रेष्ठ कवयित्री, कृष्ण भक्ति में तल्लीन मीराबाई का पद "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरों न कोई" का पाठ किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई॥
जाके सिर है मोरपखा मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई॥.....
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई॥
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही॥

<u>कार्मिक ए:-</u> से सुश्री सुमन माथुर अधीक्षक, ने जी सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन परिचय दिया तथा उनकी कविता 'मेरा नया बचपन' का वाचन किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

"बार-बार आती है मझको मधर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी॥

चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद?

इसके अतिरिक्त, उन्होंने भारत की कोकिला सरोजनी नायडू की कविता 'बदलता हूं' का वाचन किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

सोच भी बदलता हं.
मैं नजरिया भी बदलता हूं,
मिले ना मंजिल मझे.
तो मैं उसे पाने का जरिया भी बदलता हूं,
बदलता नहीं अगर कछ.
तो मैं लक्ष्य नहीं बदलता हं.
उसे पाने का पक्ष नहीं बदलता हूं।

उक्त एकक से श्रीमती बबीता साह, अधीक्षक ने हिंदी भाषा में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक रचनाकार और आधुनिक मीरा के नाम से भी पहचान बनाने वाली महान कवयित्री 'महादेवी वर्मा' की कविता 'अधिकार' का पाठ पढ़ा जिसके अंश इस प्रकार है:-

"वे मस्काते फल. नहीं
जिनको आता है मर्झाना,
वे तारों के दीप. नहीं
जिनको भाता है बुझ जाना;

वे नीलम के मेघ. नहीं
जिनको है घल जाने की चाह
वह अनन्त रितराज.नहीं
जिसने देखी जाने की राह|.....

<u>आईटी प्रशासन:-</u> से सुश्री उमा देवी, निजी सहायक ने 'खिलौनेवाला' शीर्षक नाम से 'सुभद्रा कुमारी चौहान' एक मार्मिक कविता का पाठ किया जिसके अंश इस प्रकार है:-

वह देखो माँ आज
खिलौनेवाला फिर से आया है।
कई तरह के सुंदर-सुंदर
नए खिलौने लाया है।.....
सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
छोटा-सा 'टी सेट' है
छोटे-छोटे हैं लोटा-थाली।!

इसके अतिरिक्त, श्रीमती पूनम मल्होत्रा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने भारतीय हिंदी भाषा की उपन्यासकार और लघु-कथा लेखिका 'गीतांजलि श्री' के विषय में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने ये बताया कि गीतांजलि श्री ने कई लघु कथाएं और पाँच उपन्यास लिखे। 2022 में, उनके उपन्यास 'रेत समाधि' ने अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीता। यह बताते हुए उन्होंने गीतांजलि श्री की 'प्राइवेट लाइफ' नामक कहानी के कुछ अंश पढे:-

पाँच महीने वह भी छिपा गई थी कि उसने यह बरसाती ले ली है और होस्टल छोड़ दिया है। तऩख्वाह का एक चौथाई से कुछ अधिक किराए में लुट जाता था, पर उसे वह मंजूर था।.....वह उसे नौकरी करने से नहीं रोक पाए थे। शादी के लिए उसे किसी तरह राजी नहीं करा पाए थे। पहाड़ की तरह उसकी उम्र हो रही थी, पर वह उसे 'इज्जत' से बसर करने को तैयार नहीं कर पाए थे। वह उनके लिए खटकता काँटा बन गई थी।"

श्रीमती नेहा शुक्ला, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने मन्नू भण्डारी के उपन्यास 'आपका बंटी' जो कि विवाह विच्छेद की त्रासदी में पिस रहे एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया था, के कुछ अंश पढे–

ममी का रोना बंटी को एकाएक बड़ा बना गया। बड़ा और समझदार। ममी पापा की लड़ाई हो गई है पक्कीवाली। दोस्ती तो अब हो नहीं सकती। ममी ने खुद उसे बताया। बिलकुल ऐसे, जैसे बड़ों को बताया जाता है। साथ ही यह भी कि अब ममी के लिए जो भी है, बंटी ही है।
और ममी के एकमात्र सहारे बंटी के ऊपर जैसे हज़ार हज़ार जिम्मेदारियाँ आ गई ममी को प्रसन्न रखने की।.....
आखिर में, श्रीमती नेहा शुक्ला, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने पुरुष एवं महिला को एक साथ पारिवारिक जीवन को चलाने में योगदान देने के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए और साथ ही उक्त उपन्यास को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।
उन्होंने इस गतिविधि में सभी प्रतिभागियों को भाग लेने के लिए धन्यवाद किया और बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि ऐसी गतिविधियों से न केवल हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ेगी बल्कि इससे साहित्यिक ज्ञान का भी वर्धन होगा।
अंत में, श्री गुलाब सिंह ने औरतों की वर्तमान दयनीय स्थिति पर अपने विचार प्रस्तुत किए और प्रख्यात काल बेलिया नर्तकी गुलाबो सपेरा की जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि उनकी पैदाइश पर उनको खत्म करने कोशिश की गई परंतु आज विश्व भर में वह अपने नृत्य से प्रसिद्धि प्राप्त कर रही है। औरत सक्षम हर परिस्थिति में है।
इस गतिविधि में सभी प्रतिभागियों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उत्साहपूर्ण भागीदारी दी। इस प्रकार यह हिंदी गतिविधि सम्पन्न हुई।

झलकियाँ